संघ के प्रति निश्ठा मजबूत हो : आचार्यश्री महाश्रमण
तेरापंथ को बताया सबसे बडा धर्म संघ
साप्ताहिक द-र्नाचार प्रवचन माला का समापन
आमेटः 25 जनवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ धर्म संघ को सबसे बडे संघ के रुप में निरुपित करते हुए कहा कि हम :ाासन की सन्निधि में रह रहे है। हमारा :ाासन बडा है और इसके बाद गुरु अथवा आचार्यों का स्थान निर्धारित होता है। हमारी संघ के प्रति निश्ठा मजबूत बने, इस दि-ाा में प्रयास करने की आव-यकता है। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां अहिंसा समवसरण में साप्ताहिक द-र्नाचार प्रवचन माला के अंतिम दिन बुधवार को संघ निश्ठा का विकास विशय पर श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कालांतर में व्यक्तिगत साधना पर बल दिया जाता था, लेकिन अब इस तरह की साधना का उपयोग करने पर पूरी तरह निशेध हो गया है। वर्तमान में संघ की साधना और इसके प्रति निश्ठा पर ही वि-ोश ध्यान दिया जा रहा है। संघ हमारी रक्षा करता है और यदा-कदा उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों से सामना करने के लिए सहारा देता है। हमारे संघ में संघवध साधना का क्रम बहुत मजबूत है। भगवान महावीर स्वामी ने एक ऐसे विधान अथवा मर्यादा का निर्माण किया, जो संघ के चारों ओर सुरक्षा प्रहरी के समान कार्य करती है और इसकी रक्षा करने में लगी रहती है। संघ में संघीय चेतना का उपयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने मन में अपनत्व की भावना के समावे-ा की आव-यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि किसी भी तरह संघ पर कोई आंच नहीं आ पाए। इसकी रक्षा के साथ एकता का भाव प्रदर्-ात करने की जरुरत हैं।

संघ :ाासन स्थायी

आध्यात्म के महासूर्य ने संघ :ाासन को स्थायी बताते हुए कहा कि मनुश्य स्थायी नहीं होता है। वह एक जीवन चक्र में बंधा होता है। उसका आना-जाना लगा रहता है। व्यक्ति की प्रक्रिया जन्म के साथ :ाुरु होती है और उसकी मृत्यु के साथ ही समापत हो जाती है। हमारे धर्म संघ का 251 वर्शों से चिर स्थाई :ाासन तय है। इसका व्यापक विकास हो और यह अनवरत रुप से नई बुलंदियों को छुए। इस दि-ाा में हम सब को चिंतन और उसका क्रियान्वयन करने की आव-यकता है। आचार्यश्री ने प्रथम मंत्री मुनि मगनलाल का उदाहरण देते हुए कहा कि वे संघ निश्ठा के प्रति जागरुक रहकर अपनी सजगता द-ार्ाते थे। हमारे में भी ऐसी ही निश्ठा की आव-यकता है। संघ के लिए जीने और मरने की आकांक्षा होनी चाहिए। तुच्छ और छोटी-छोटी बातों को लेकर संघ छोडने का भाव मन में

नहीं आना चाहिए। उन्होंने गुरु द्वारा यदा कदा कही जाने वाली कठोर बातों, उलाहना, परिषद् के बीच डांटने की प्रवृति को अन्यथा नहीं लेने की बजाय यदि हम उसे विनयपूर्वक ग्रहण करने के लिए प्रयास करने की बात कही। गुरु अपने शिष्य और समाज के किसी व्यक्ति को गल्ती करने पर उलाहना दे सकते है। जो शिष्य अपने गुरु की डांट को सह लेते है। गुस्से और आवेश में नहीं आता। वह महानता की ओर अग्रसर होता है। इस दौरान आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों के विशय से संबंधित जिज्ञासाओं को भी :ांत किया। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

संयम फॉर लाइफ फाउण्डे-न का आगाज आज

आध्यात्म के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में गुरुवार को यहां अहिसा समवसरण में संयम फॉर लाइफ फाउण्डे-न का आगाज होगा। स्व. कंकूबाई फौजमल चौधरी की स्मृति में निर्मित इस फाउण्डे-न के मैनेजिंग ट्रस्टी अर्जुनलाल चौधरी है।

बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता के परिणाम घोशित

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता के परिणाम मुनि जितेन्द्रकुमार ने बुधवार को घोशित किए। उन्होंने बताया कि साधु वरिश्ठ वर्ग में प्रथम मुनि राजेन्द्र कुमार, द्वितीय मुनि मदनकुमार, साधु कनिश्ठ वर्ग में प्रथम मुनि अनंतकुमार, मुनि महावीरकुमार, मुनि गौरवकुमार, साध्वी वरिश्ठ वर्ग में प्रथम साध्वी सहजय-ा, द्वितीय साध्वी जगवत्सला, तृतीय कमलविभा, साध्वी कनिश्ठ वर्ग में प्रथम साध्वी लक्ष्यप्रभा, साध्वी इन्दुय-ा और तृतीय साध्वी मुदिताश्री रही। साधु वर्ग में निर्णायक मुनि विजयकुमार और मुनि मोहजीतकुमार तथा साध्वी वर्ग में समणी सौम्यप्रज्ञा व समणी जयंतप्रज्ञा थी। प्रतियोगिता में 16 साधु और 40 साध्वियों ने ि-रकत की।

अणुव्रत और नैतिकता का दिया संदे-ा

तुलसी अमृत विद्यापीठ आमेट की ओर से यहां अहिंसा समवसरण में आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में मंगलवार रात को आयोजित वार्शिकोत्सव कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने एक से बढकर एक प्रस्तुतियां देकर लोगों का मन मोह लिया। उन्होंने ने अपनी प्रस्तुतियों में जीवन विज्ञान, अणुव्रत और नैतिकता का संदे-ा भी दिया। :ाम साढे सात बजे :ुरू हुए इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने विभिन्न नाटकों, एकल व समूह गीतों के माध्यम से प्रस्तुतियां देकर द-र्ाकों को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम देर रात तक चलता रहा, फिर भी हजारों की संख्या में मौजूद द-र्ाकों ने हाड कंपकंपा देने वाली ठण्ड में विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने अपना प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए बच्चों द्वारा प्रदर्-ित कार्यक्रमों की प्र-ांसा की और नैतिक ि-क्षा को बढावा देने पर जोर दिया। मुनिश्री सुखलाल ने विद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक हुए विकास कार्यों पर चर्चा की। विद्यालय प्रबंधन

समिति के अध्यक्ष मोहनलाल दक एवं मंत्री गणपतलाल डांगी ने अतिथियों का स्वागत किया। संस्था प्रधान आई. एच गौरी ने आभार प्रकट किया।